स्वप्न कार्य (Dream Work)

स्वप्न के अव्यक्त-विषय (latent content) का रूप किस प्रकार बदलता है अर्थात् किस प्रकार स्वप्न को अव्यक्त विषय व्यक्त विषय में परिवर्तित हो जाता है। फ्रायड ने स्वप्न कार्य को इस प्रकार से बताया है- स्वप्न का अव्यक्त विषय अतृप्त कामुक इच्छाएं होती हैं, जो चेतन प्रतिबन्धों के कारण अपने वास्तविक रूप में व्यक्त नहीं हो सकती। प्रतिबन्धक अचेतन की इच्छा के प्रति प्रतिरोध उत्पन्न करता है। इसीलिए मूल स्वप्न-इच्छाएँ (basic dream desire) विकृत रूप धारण करके प्रकट होती हैं। अतः अचेतन की मूल स्वप्न-इच्छाएँ स्वप्न के जिस कार्य के फलस्वरूप विकृत रूप (distorted form) धारण करती हैं उसे स्वप्न कार्य कहते हैं।

ब्राउन ने स्वप्न कार्य के स्वरूप को स्पष्ट करते हुए कहा है "स्वप्न-कार्य वह मनोरचना है, जिसके द्वारा अव्यक्त स्वप्न विषय, व्यक्त स्वप्न विषय में परिवर्तित हो जाता है।"

फ्रायड के अनुसार, स्वप्न के व्यक्त और अव्यक्त विषयवस्तु एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। अव्यक्त विषय स्वप्न के मौलिक विषय (original material) हैं, जबकि व्यक्त विषय उस मौलिक विषय का अनुवाद होता है तथा यह अस्पष्ट (vague), निरर्थक (meaningless), और महत्वहीन (insignificant) स्वरूप का प्रतीत होता है। अनुवाद का यह कार्य स्वप्न के कुछ तंत्रों (machanism) की सहायता से होता है, जिसे स्वप्न-तंत्र या स्वप्न-रचना (dream-machanism) कहते हैं। फ्रायड के अनुसार "जिन प्रक्रमों से गुप्त स्वप्न को व्यक्त स्वप्न में बदला जाता है, उसे स्वप्न-तंत्र या स्वप्न-रचना कहते हैं।"

फ्रायड ने पांच प्रमुख स्वप्न रचनाओं को स्पष्ट किया है जिनकी सहायता से स्वप्न के गुप्त विषय

Scanned with CamScanner

08 व्यक्त विषय के रूप में परिवर्तित होते हैं। ये रचनाएँ निम्नलिखित हैं-

09 (1) संक्षेपीकरण (Condensation)
10 (2) विस्थापन (Displacement)
(3) प्रतीकीकरण (Symbolization)
11 (4) नाटकीयकरण (Dramatization)
(5) पश्चात्-विस्तारण (Secondary elaboration)

12 (1) संक्षेपीकरण - संक्षेपीकरण स्वप्न रचना का पहला काम है। यह वह रचना है जिसके द्वारा अव्यक्त विषय के अनेक तत्व व्यक्त विषय के एक ही तत्व व्यक्त होते हैं। इसका अर्थ हुआ कि स्वप्न बहुत ही संक्षेप में किसी घटना को व्यक्त
Lunch करता है। वास्तव में, अव्यक्त विषय की अधिकांश बातें व्यक्त विषय में आने से पहले ही गायब हो जाती हैं।
14 अर्थात अव्यक्त विषय के कुछ अंश ही व्यक्त विषय में आ पाते हैं।

15 (2) विस्थापन - स्वप्न रचना की दूसरी प्रक्रिया विस्थापन है। यह
16 सेन्सरशीप (censorship) का कार्य करती है। इस प्रक्रिया द्वारा स्वप्न में गुप्त विषय के व्यक्ति या घटना के बदले किसी अन्य व्यक्ति या घटना व्यक्त विषय की सामग्री बनते हैं।
17 अर्थात अचेतन की इच्छाएँ व्यक्ति के वास्तविक जीवन के जिस व्यक्ति या घटना से सम्बद्ध होती है उसकी जगह पर
18 किसी और व्यक्ति एवं घटना से सम्बद्ध हो जाती है। इस प्रकार से स्वप्न की वास्तविकता विकृत हो जाती है।
19

20 (3) प्रतीकीकरण - प्रतीकीकरण स्वप्न-रचना का एक प्रमुख अंग है। प्रतीकीकरण वह स्वप्न-रचना है जिसके द्वारा अचेतन के अव्यक्त (गुप्त) विषय अपने प्रतिनिधि अर्थात प्रतीकों द्वारा
Eve. व्यक्त विषय के रूप में परिवर्ति होकर प्रकट होते हैं। गुप्त विषय को परिवर्तित रूप देने का सबसे महत्वपूर्ण क्रम प्रतीकीकरण की प्रक्रिया का ही है। संक्षेपीकरण तथा विस्थापन

Scanned with CamScanner

की प्रक्रियाओं द्वारा गुप्त विषय पूर्णतः असली रूप में परिवर्तित नहीं हो पाता क्योंकि अहं (ego) का चेतन भाग उसे प्रकट होने से रोकता है क्योंकि पकड़े जाने का भय होता है।

फ्रायड ने स्वप्न प्रतीकों को सार्वजनीन कहा है। स्वप्न प्रतीकों के अर्थ सब के लिए एक ही होते हैं। उनमें वैयक्तिक भिन्नता (individual difference) नहीं होती है। इन्होंने सभी प्रतीकों को यौन सम्बन्धी बताया है। क्योंकि स्वप्न में जो अचेतन इच्छाएँ प्रकट होती हैं वे यौन सम्बन्धी होती हैं।

(4) नाटकीयकरण – इसमें स्वप्न देखने वाला, स्वप्न देखते समय ऐसा अनुभव करता है जैसे कि वह कोई चलचित्र देख रहा हो। स्वप्न में दिखाई पड़ने वाले चित्र प्रायः दृश्य (visual), श्रवण (auditory), स्वाद और स्पर्श से संबंधित होते हैं। अर्थात स्वप्न एक गतिशील चित्र के रूप में अचेतन की इच्छाओं को विकृत कर व्यक्त करता है।

(5) पश्चात्-विस्तारण – स्वप्न की घटनाएँ प्रायः निरर्थक, असंगत तथा अतार्किक होती हैं। स्वप्न देखने वाला स्वप्न के खत्म होने पर जब जाग्रत अवस्था में होता है तो वह उन घटनाओं को सार्थक (meaningful) संगत (consistent) एवं तार्किक (logical) रूप में वर्णन करता है। इसे ही पश्चात्-विस्तारण कहते हैं। अर्थात स्वप्न के समाप्त होने पर व्यक्ति अर्धचेतनावस्था (subconscious) में रहता है और तब उसका अहं (ego) स्वप्न की असम्बद्ध एवं बिखरी हुई कड़ियों में अपनी ओर से कुछ बातों को जोड़कर या घटाकर उसे सार्थक और तर्कसंगत (meaningful and logical) बना देता है।

Scanned with CamScanner